CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सर्वप्रथम

आदि शंकराचार्य

अद्वैत-प्रवर्तक महायोगी

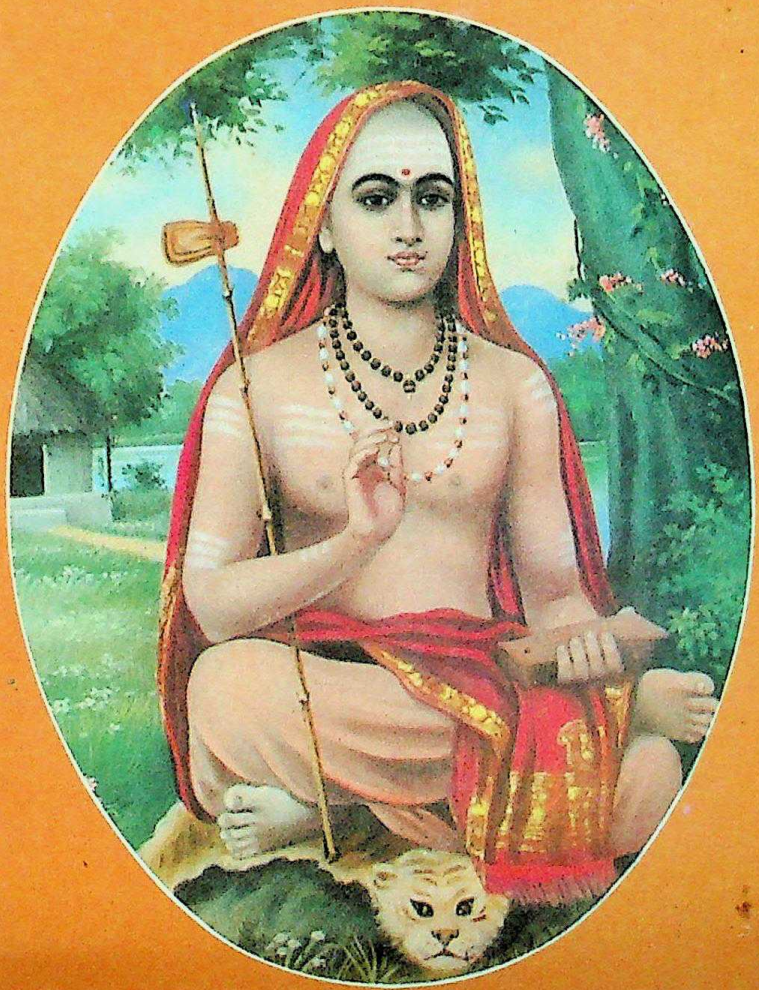

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भारतीय तत्त्वज्ञान, बुद्धिसामर्थ्य और अलौकिक अध्यात्मज्ञानका प्रभाव आजभी तत्त्वज्ञान, साहित्य, संशोधन-नीति एवं मानव्य इन क्षेत्रोंपर आचार्यजीका सिक्का दीख पडता है । इस महान् कार्यके लिये शंकराचार्यजीको केवल ३२ वर्षका जीवनही पर्याप्त हुआ । ऐहिक तथा आध्यात्मिक ज्ञानमें मूलतः कोई भिन्नता नहीं है । ये दोनों परस्पर विरोधक विद्याएँ नहीं है । सत्य धर्म और प्राचीन वैदिक साहित्यकी तत्त्वप्रणाली ये दोनों अध्यात्मके साथ एकरूपही हैं । दोनों मोक्षकी तरफही जाते हैं ।

आध्यात्मिक ज्ञानसाधना किये बगैरही आद्यशंकराचार्यने सुबोध-सुललित-मधुर स्तोत्र-रचनाद्वारा महान् संस्कृतभाषाको लोकप्रिय करनेमें भी यश प्राप्त किया । भगिनी निवेदिताजी कहती थी –" गौर का विषयपर किसी अन्य बुद्धिवादीकी बुद्धिकी पहुँचसे परे ऐसे सुमधुर स्तोत्रोंकी रचनाओंको आचार्यजीने अक्षरोंमें निबद्ध किया है । आचार्यने पाश्चात्य विद्वानोंके कानभी संतृप्त किये हैं । असंस्कृत मन आकृष्ट किये हैं । इस प्रकारके अमर ललित साहित्यके महान् निर्माता होते हुएभी आचार्य विरक्त परंतु अत्यधिक स्नेहभावसे अपने शिष्योंसमेत रह सके यह केवल आश्चर्यही है । "

आद्य शंकराचार्यके अतिरिक्त और किसीभी व्यक्तिद्वारा राष्ट्रिय-एकता एवं एकात्मताके लिये इतनामहान् दिव्य-भव्य कार्य नहीं किया है । पूर्व-पश्चिम-दक्षिण-उत्तर भारतकी चारों परिसीमाओंमें पदयात्रा करके शंकराचार्यने सारा देश एक विशेष विचार-प्रणालीमें निबद्ध किया । उस कालकी सांप्रदायिक विविध परंपराओंको शास्त्रार्थ-सभाओंमें जीतकर धार्मिक एकताको मजबूत बनाया । समाजविघातक परंपराओंको जडसे उखाडकर फेंक दिया अंधश्रद्धाओंका परदा फाडकर सत्य-ज्ञान-मार्गका महाद्वार सर्वसामान्य जनसमूहके लिये उद्घाटित कर दिया ।

डिस्कव्हरी ऑफ इंडिया इस ग्रंथमें पं. जवाहरलाल नेहरूने कहा –" आदि शंकराचार्यकी अथक परिश्रमशीलता तथा विविधता पूर्ण कार्यक्षमता आश्चर्यकी बातही थी । वनवासमें गूँफा-निवास स्वीकारकर अपने मोक्षप्राप्तिके लियेही प्रयत्नशील तथा अन्य जनोंकी चिंता न करके पलायनवादको स्वीकार करनेवाले योगी वे नहीं थे । कई लोग प्रदीर्घ जीवन मिलनेपरभी जितने महान् कार्य नहीं कर पाते उनसे कई गुने अपने अलौकिक बुद्धिसामर्थ्य तथा असामान्य व्यक्तित्वका सिक्का आचार्यजीने भारतीय जनजीवनपर जमाया है । आजभी उसके परिणाम दृग्गोचर हैं । आद्य शंकराचार्य ज्ञानी परंतु तत्त्ववेत्ता, चिकित्सक होकरभी सश्रद्ध कवि और योगी थे । आचार्यजीके जीवनमें इन सर्व गुणोंका हृदयंगम संगम था । यही नहीं बल्कि एक समर्थ संघटक और व्यावहारिक समाजसुधारककी योग्यता एवं श्रेष्ठताभी अविवाद्य है । "

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् कहते थे –" भारतके आध्यात्मिक इतिहासमें एक अमर व्यक्तित्व थे शंकाचार्य ! देशके अन्य धर्म-प्रवर्तकोंकी तरह ' मैं फलाँ फलाँ धर्मका संस्थापक हूँ ।' यह कहलवानेकी जिद् शंकराचार्यने कभी नहीं की । आप कहते थे ' मैंने भारतीय तत्त्वज्ञानका पुनरुज्जीवनही किया है । "

राजा राममोहन रॉय, स्वामी विवेकानंद, लोकमान्य तिलक, श्रीअरविन्द, महात्मा गांधी, आचार्य विनोबाभावे, पं. जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री एवं इंदिरा गांधी आदि सभी नेताओंने भारतीय स्वतंत्रता संग्रामकी मूलभूत प्रेरणा आदि शंकराचार्यजीसेही पायी है ।

शंकराचार्य द्वादश-जन्म-शताब्दी-उत्सव इसी परंपराको जोडनेवाला एकमेव विभाग है ।

Rashtriya Sankara Jayanti Mahotsava, April 21, 1988—April 21, 1989 Dept. of Culture, GOI.

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

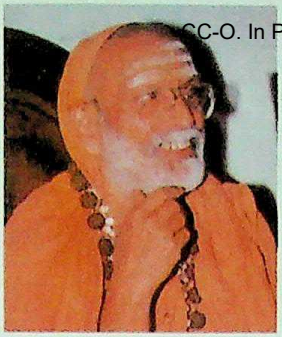

सचित्र चरित्र

आदि शंकराचार्य द्वादश-शताब्दी-निमित्त वाङ्मयी पूजा

दक्षिणाम्नाय श्रीशारदापीठम्, शृंगेरी (कर्णाटक)के उभय जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य प. पू. श्रीअभिनव विद्यातीर्थ महासंनिधानम् तथा प. पू. श्रीभारतीतीर्थ संनिधानम् महाराजश्रीके शुभ आशीर्वादकृपासे आदि शंकराचार्य जीवन-इतिहास-विषयक यह पुस्तिका प्रकाशित हो रही है ।

यह रंगीन चित्रावली कालडी(केरळ)के निकट पेराम्बवूरके कलाकार श्री. सुकुमारन्-जीने बनायी है ।आपने प. पू. जगद्गुरुमहाराजश्रीके मार्गदर्शनसे यह कार्य ई.१९८६में संपन्न किया । आज हम यह अनुपम चित्रावली शृंगेरीके आदि शंकराचार्य मन्दिरके सम्मुख विराजमान विशाल प्रवचन मन्दिरके प्रदीर्घ दीर्घमें देख सकते हैं ।

भारतमें आज आदि शंकराचार्य द्वादश-जन्मशती संपन्न हो रही है । इसी उपलक्षमें श्रीमठका द्वैमासिक तत्त्वस्तोक यह षोडश पृष्ठोंकी सचित्र रंगीन पूरणी प्रकाशित कर रहा है, जिसमें अमल्गमेशन्स ग्रुप ऑफ कंपनीज्, मद्रासका सहभाग उल्लेखनीय है ।

१ भगवान् विष्णु और ब्रह्मा के नेतृत्वमें समस्त देव और ऋषिगणोंने आठवी सदीमें प्रसृत धर्मग्लानि दूरकरके सनातन धर्मके रक्षणार्थ श्रीपरमेश्वर शिवकी प्रार्थना की । वह श्रीशिवजीने मान्य की । जगद्गुरु आदि शंकराचार्यजीके अवतारकी यह पृष्ठभूमि है ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

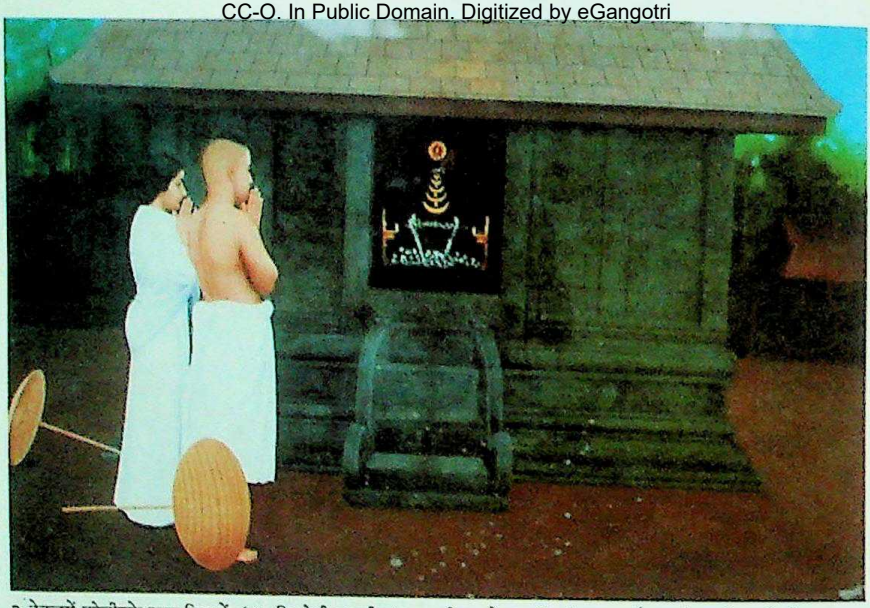

२ केरलमें कोचीनके उत्तर दिशामें (२५ किलोमीटर दूरीपर) कालडी ग्रामके दम्पति शिवगुरु और आर्यम्बा त्रिचूर-क्षेत्रमें भगवान् वृषाचलेश्वरकी अपत्यप्राप्ति-हेतु प्रार्थना कर रहे हैं।

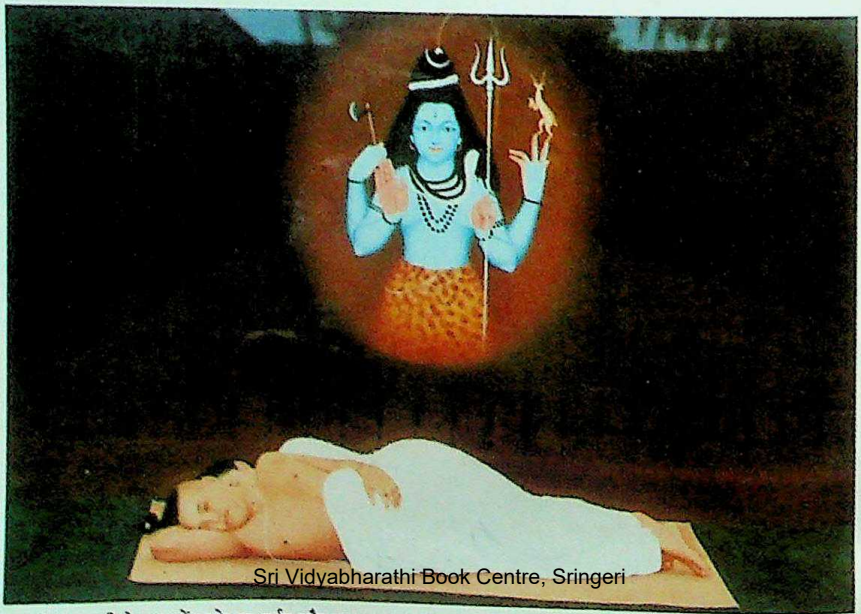

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

३ पवित्र दम्पतीको स्वप्नमें परमेश्वर-दर्शन और वर-प्रसादका लाभ।

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

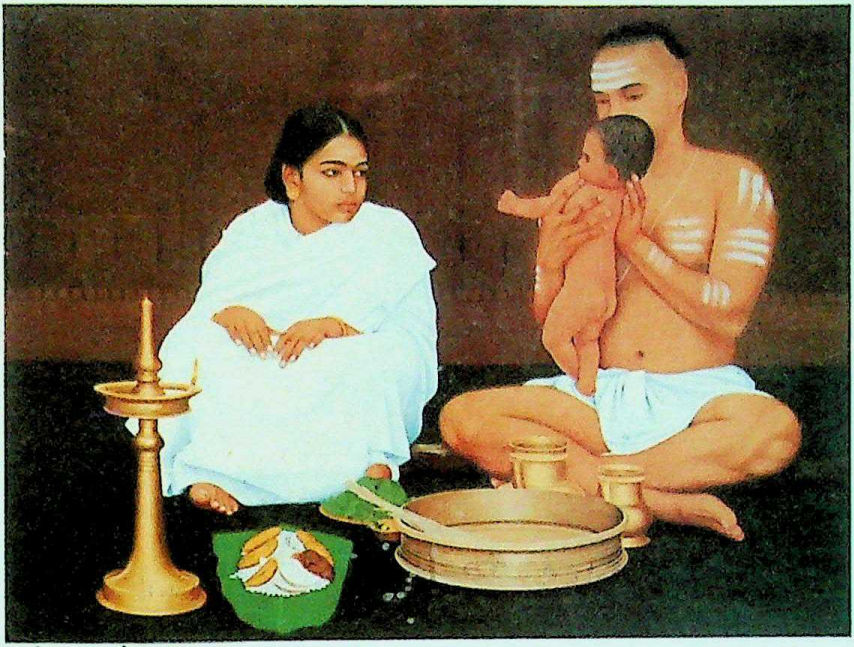

४ श्रीशिव-प्रसादसे प्राप्त सुपुत्रका नामकरण 'शं क र'।

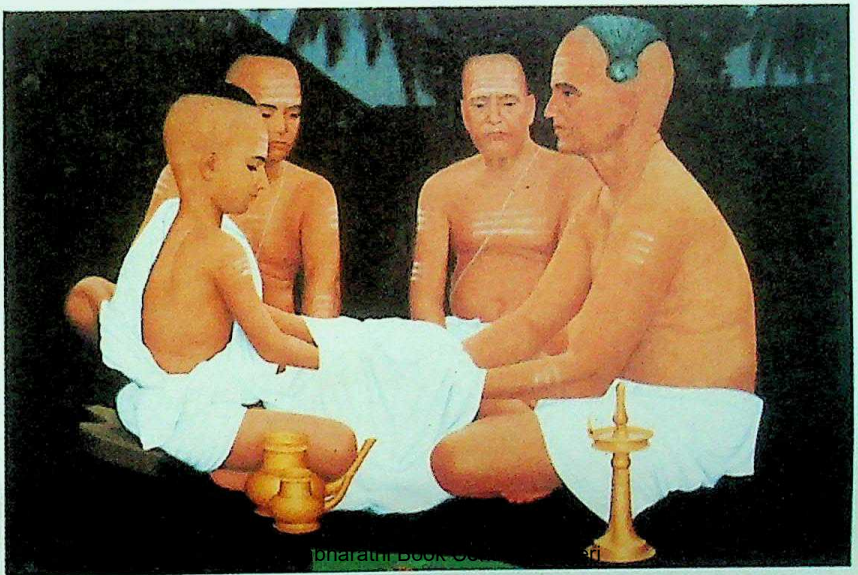

५ शंकरका पवित्र यज्ञोपवीत-संस्कार।

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

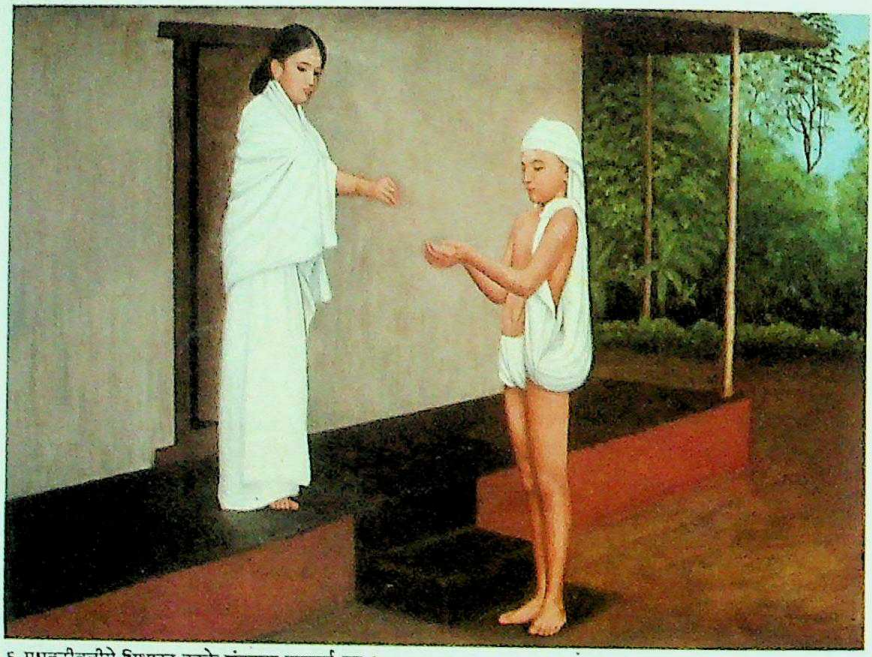

६ मधुकरीवृत्तीसे भिक्षाटन करके शंकरका ब्रह्मचर्य-व्रत ।

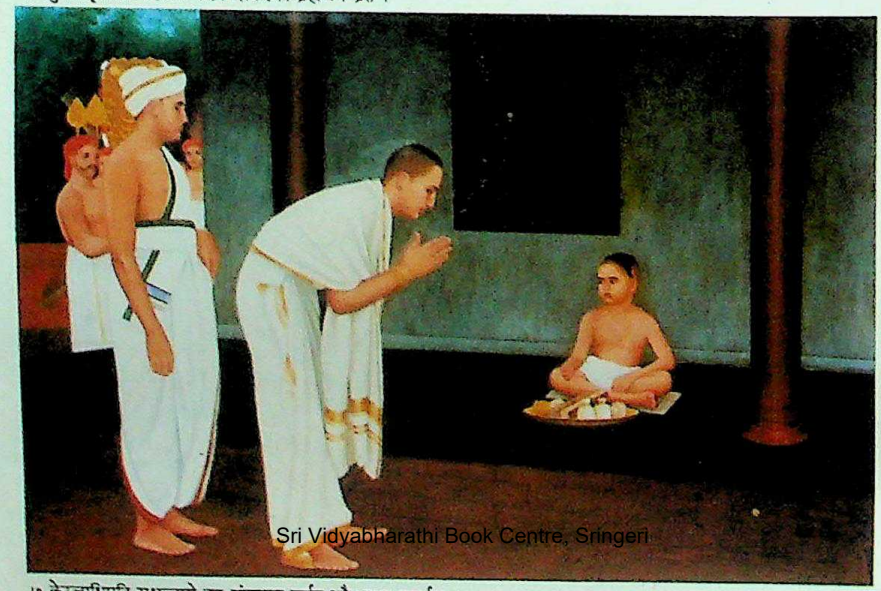

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

७ केरलाधिपति सुधन्वासे बटु शंकरका दर्शन और ग्रन्थ-समर्पण ।

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

८ पूर्णा-नदीपर स्नानके लिये जाते समय श्रान्त माताकी शंकरसे शुश्रूषा ।

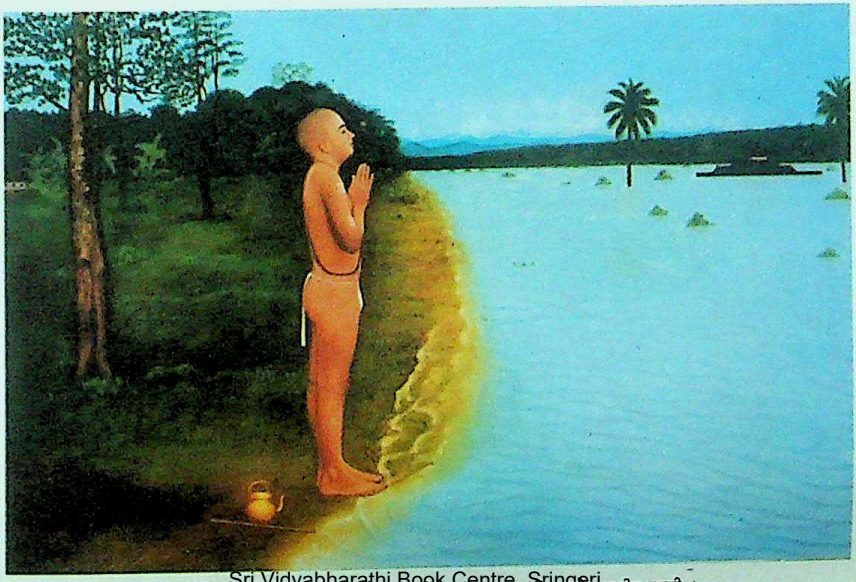

९ माँके नित्य नदी-स्नानके लिये शंकरने ईश-प्रार्थना करके नदीकी धारा बदलकर निवासके समीप लायी ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

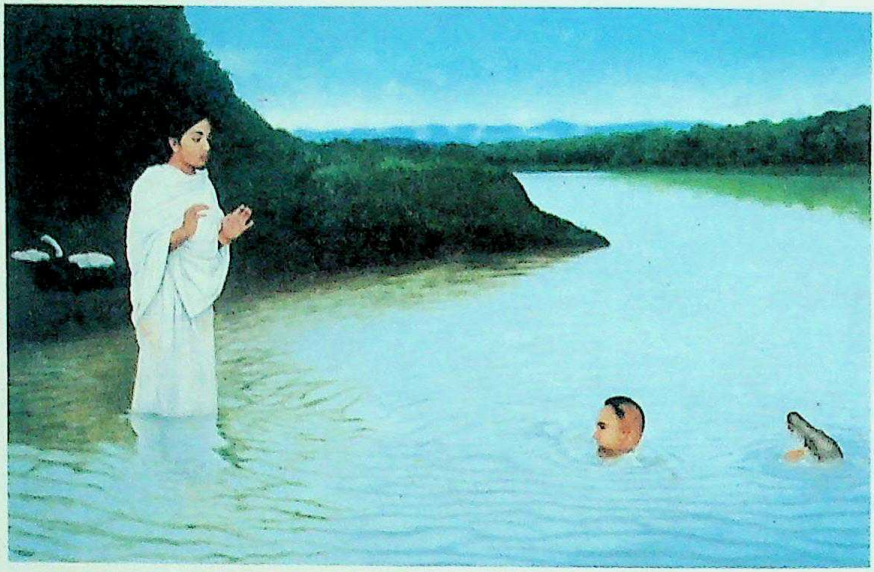

१० " माँ मुझे संन्यासके लिये अनुज्ञा दे । " ऐसी प्रार्थना करके शंकरने मातासे संन्यासकी अनुज्ञा प्राप्त की ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

११ क्रमसंन्यासके लिये गृह-त्याग करते समय मातासे शंकरको आशीर्वाद ।

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

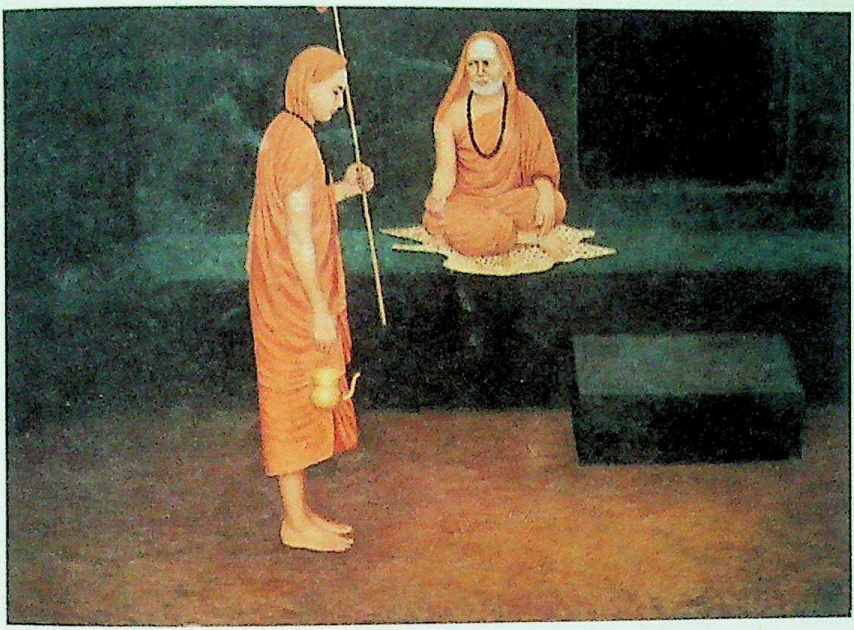

१२ संन्यासके पश्चात् गुरु-गोविन्द-भगवत्-पादके साथ युवा शंकर ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

१३ महाविप्लावसे उग्र रूप धारण करनेवाली नर्मदा नदीके प्रवाहको कमंडलुमें थामकर ग्रामरक्षण करनेवाले शंकर ।

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१४ शिष्य सनंदनको गुरु शंकरका कृपा-प्रसाद । गुरु-प्रार्थना करके नदीप्रवाहमें पैर रखतेही पैरोंतले कमलके फूलोंसे आच्छादित मार्ग पानेवाला सनंदनही तत्पश्चात् प द्म पा द बना ।

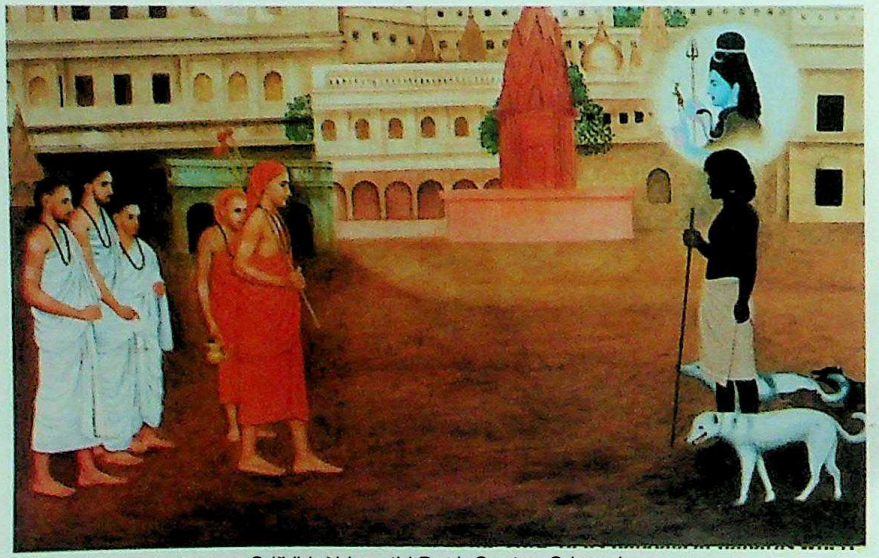

१५ वाराणसीमें चाण्डालवेश धारण करके शिवजी उनसे मिलते । पश्चात् निर्वाणषट्क महिमा शंकरने 'मनीषा-पञ्चकम्' स्तोत्रसे अक्षरबद्ध की है ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

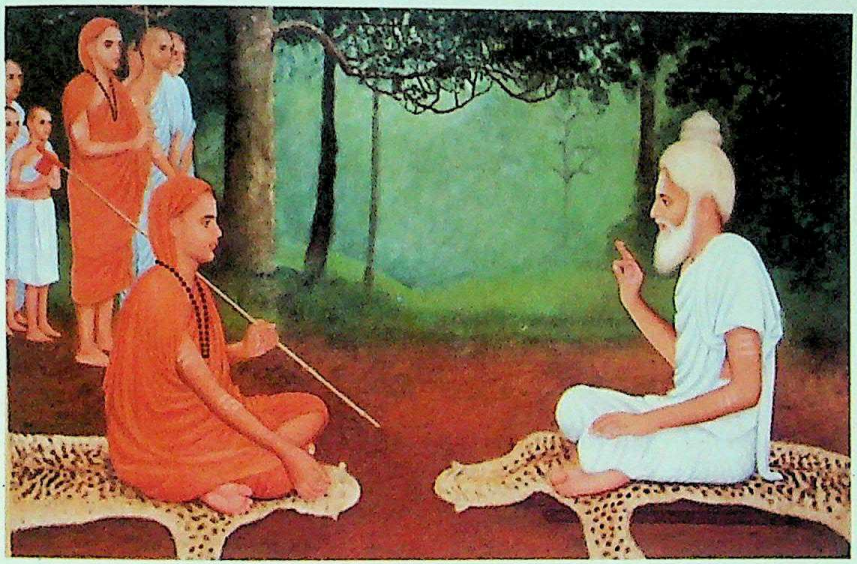

१६ वेद-व्यासजीका शंकरको दर्शन ।

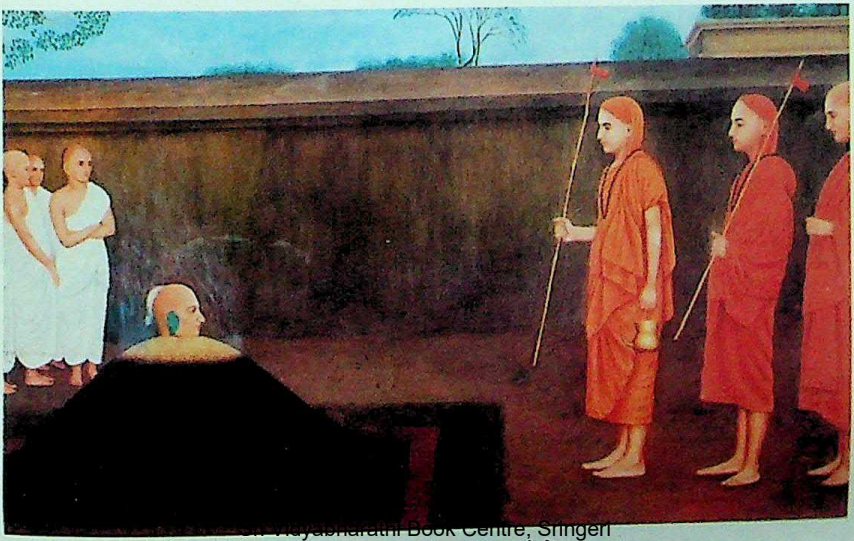

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

१७ गुरु-द्रोहके कारण प्रायश्चित्तके रूपमें तुषाग्नि-प्रवेश करनेवाले कुमारिलभट्टसे भेंट ।

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

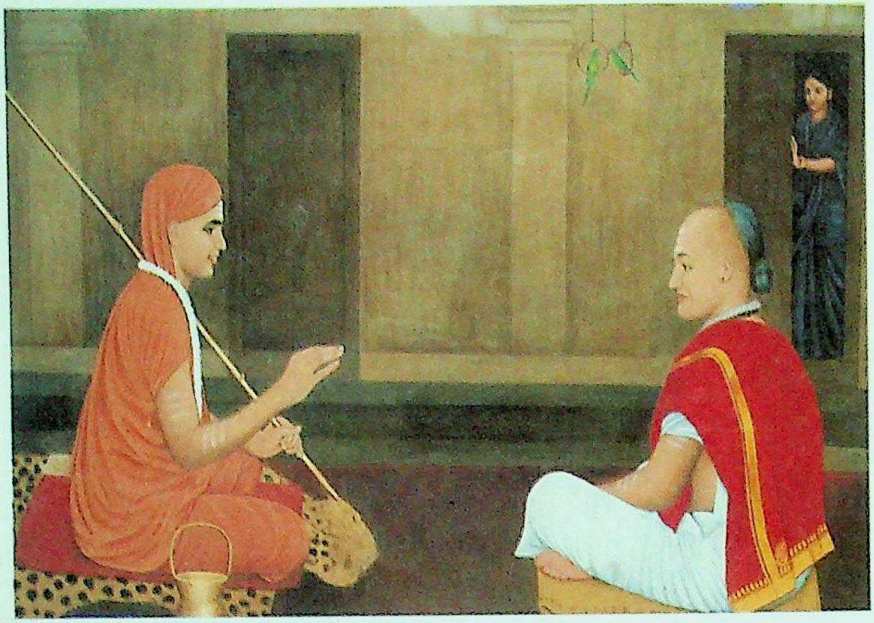

१८ विवाद सभामें मण्डनमिश्रपर विजय । मध्यस्थ उभयभारती (द्वारमें पीछेकी ओर) ।

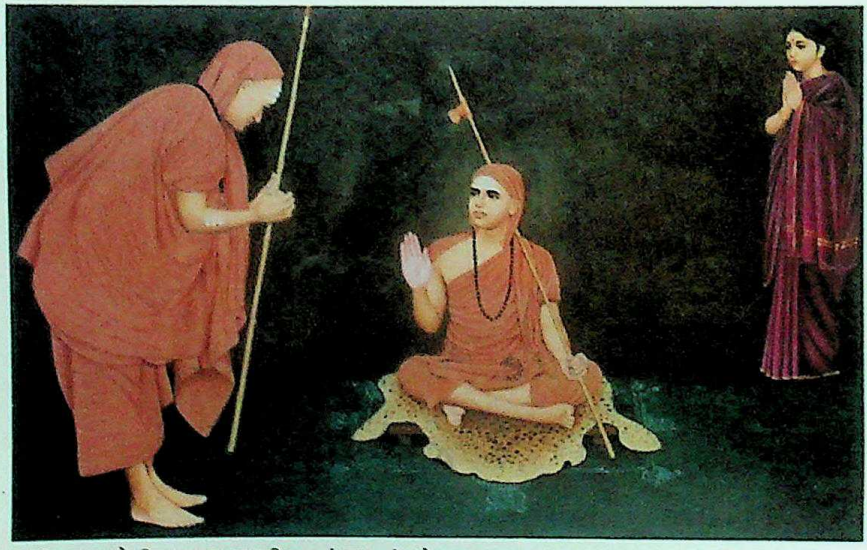

१९ विवाद सभाके नियमानुकूल मण्डनमिश्रकी पराजय [illegible]

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

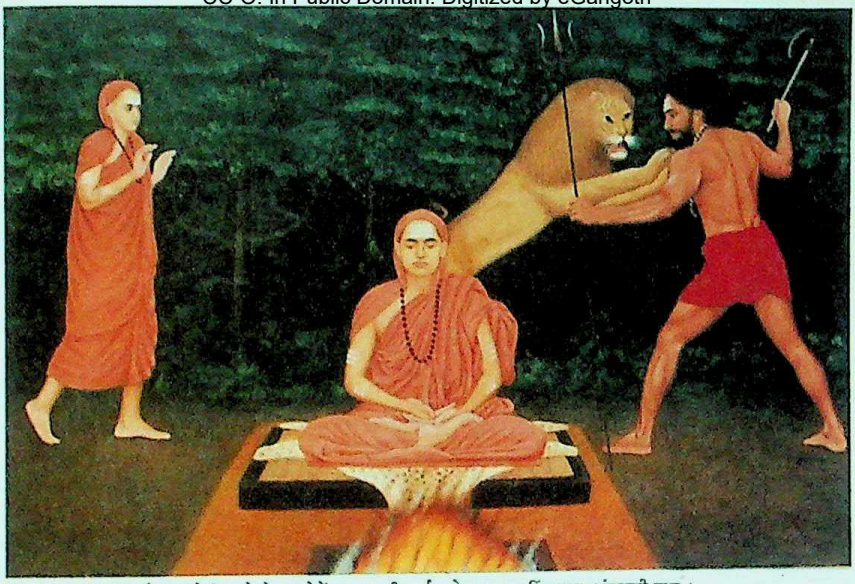

२० कापालिक शिरच्छेद करनेही वाले थे, उतनेमें पद्मपादकी प्रार्थना के कारण नृसिंहद्वारा शंकरकी रक्षा ।

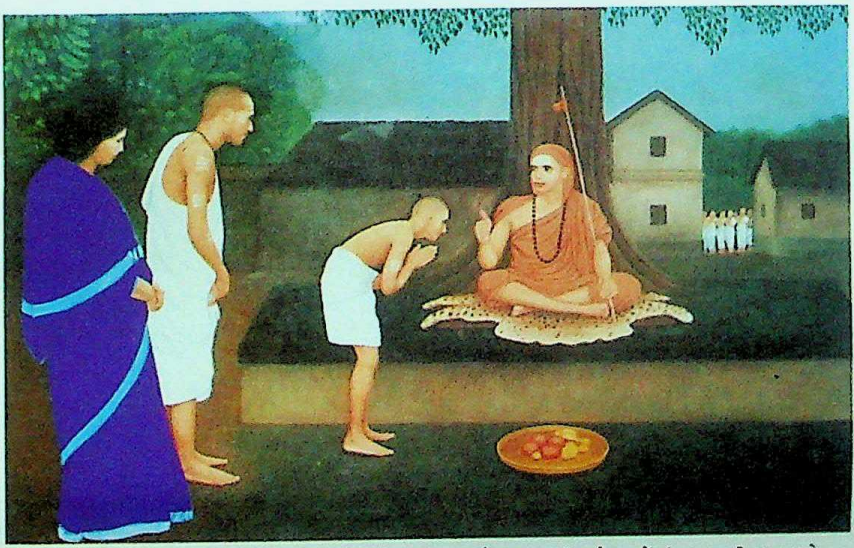

२१ अपनी भारत-यात्रामें मूकाम्बिका क्षेत्रके पास कोडचादीमें एक असहाय गूँगा बालक शिष्यके रूपमें शंकरद्वारा स्वीकार । आगे चलकर वही ह स्ता म ल क नामसे प्रसिद्ध ।

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri
Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

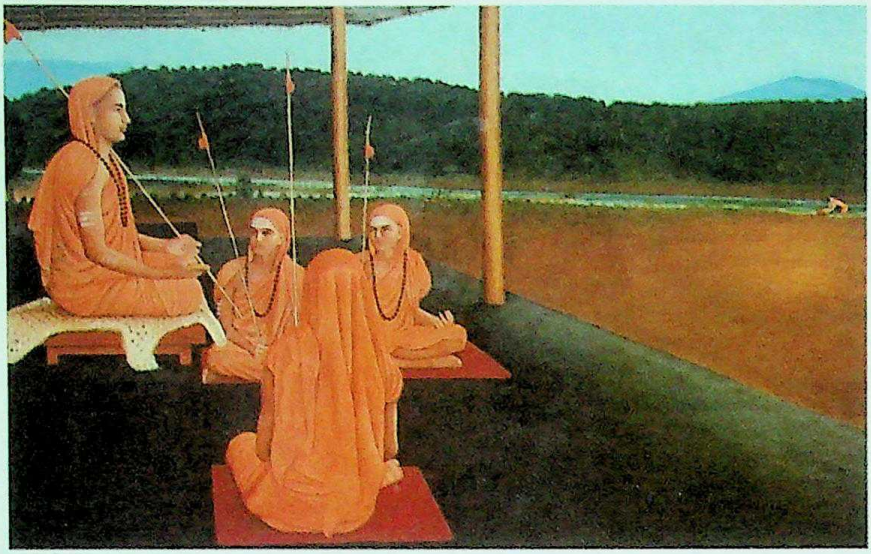

२२ उत्तम सेवाके उपलक्ष्यमें शिष्य-स्वरूप गिरीका स्वीकार । यही तो ट क नामसे विख्यात ।

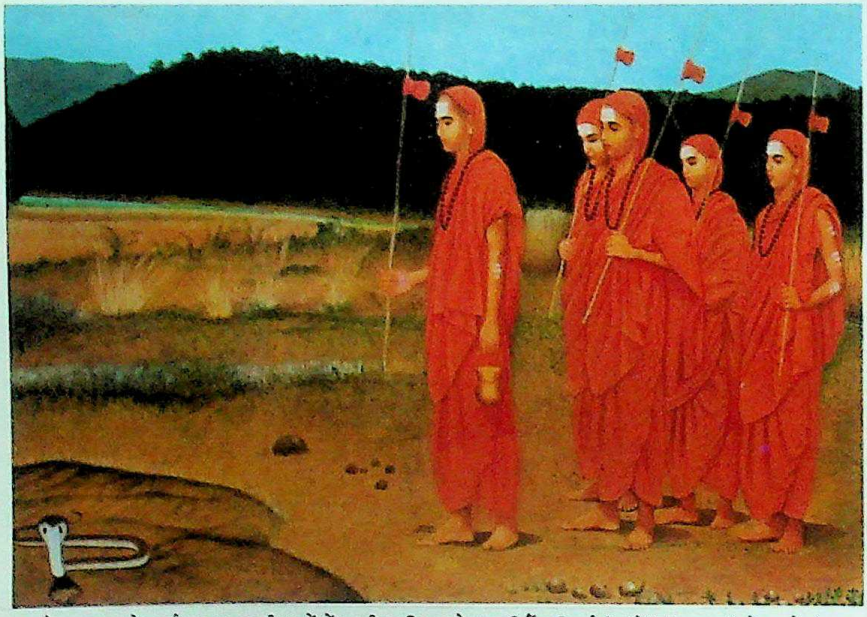

२३ वैर-भावनावाले सर्पद्वारा लहलहती धूपमें मेंढककी सुरक्षितता देखकर निर्वैर निसर्गश्री-शृंगेरीकी प्रथम-पीठके रूपमें शंकर-द्वारा स्वीकृति ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

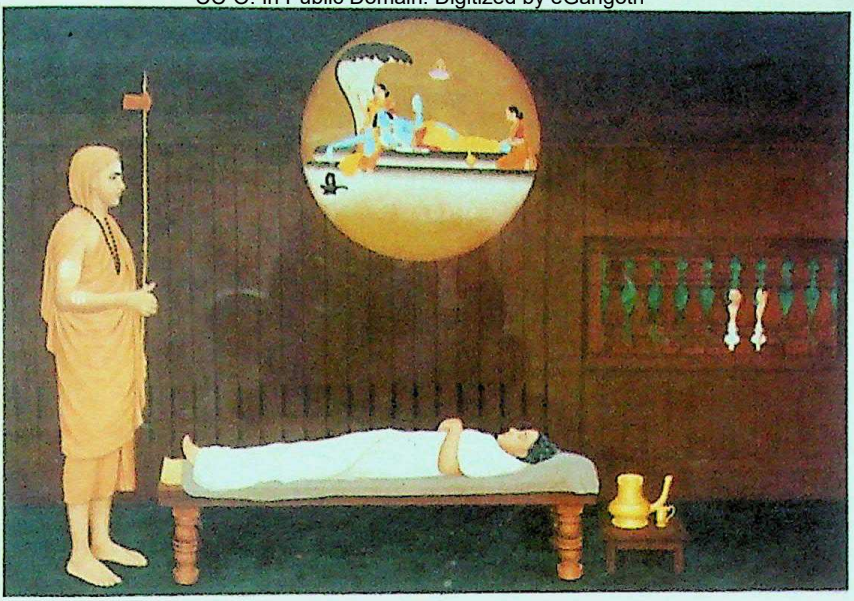

२४ मरणोन्मुख माताको शंकरद्वारा विष्णु-सायुज्य दर्शन ।

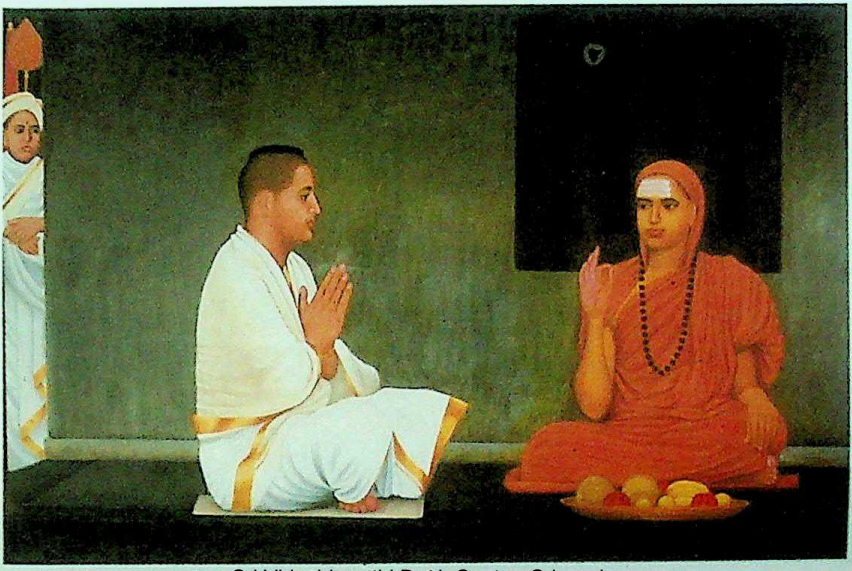

२५ शंकरद्वारा राजा सुधन्वाको विनष्ट वर्ष्मको विभो मण्डनम् ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

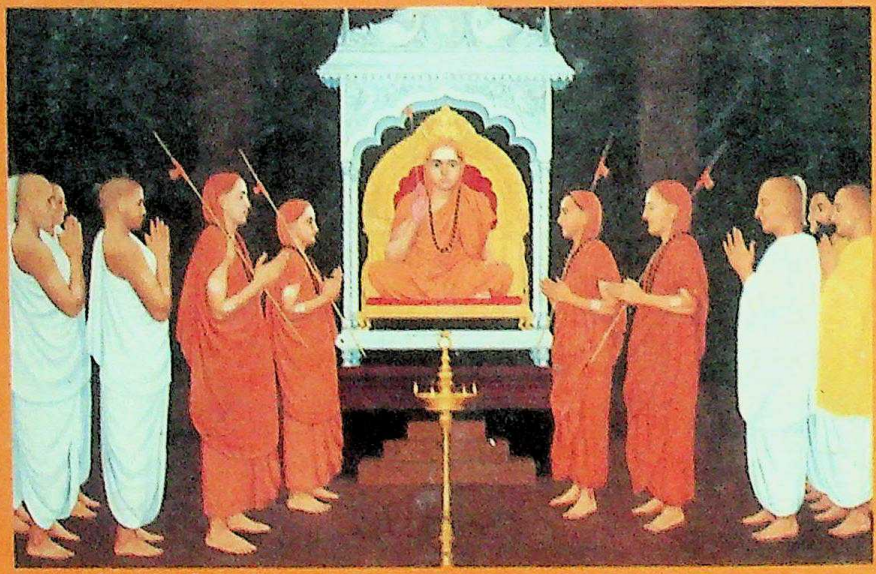

२६ काश्मीरमें शंकरका सर्वज्ञ-पीठारोहण ।

२७ केदारनाथमें उनके अवतार-समाप्तिके अवसरपर शिष्योंको शंकराचार्यजीका अंतिम दर्शन ।

(माधवीय-शंकर-विजयाधारित कथा)

तत्त्वालोक-पुनर्मुद्रण

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri
सौजन्य: अप्पास्वामी एण्ड कंपनीज, मद्रास